स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड - डॉ० मुन्ना साह
(षष्ठ पत्र - प्रयोजनमूलक हिन्दी) हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

हिन्दी की शब्द-सम्पदा

प्रत्येक भाषा की सार्थक शब्द-सम्पदा होती है। हिन्दी भाषा की शब्द-सम्पदा का वर्गीकरण विभिन्न आधारों पर किया गया है। प्रमुख आधार इस प्रकार हैं -

(i) स्रोत की दृष्टि से
(ii) निर्माण की दृष्टि से
(iii) प्रयोग की दृष्टि से
(iv) परिवर्तनशीलता की दृष्टि से

(i) स्रोत की दृष्टि से - इस दृष्टि से यह देखा जाता है कि विभिन्न शब्द भाषा में किस प्रक्रिया से शामिल हुए हैं। स्रोत की दृष्टि से शब्द भंडार को मुख्यतः चार भागों में बाँटा जाता है -

(क) तत्सम शब्द - तत्सम शब्द वे शब्द होते हैं जो संस्कृत भाषा से ज्यों का त्यों बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। जैसे - साधु, महात्मा, जल, इत्यादि।

(ख) तद्भव शब्द - इसका अर्थ है कि जो शब्द संस्कृत के समान तो नहीं हैं, पर संस्कृत से ही निर्मित हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहा जाता है। अर्थात् संस्कृत के शब्द परिवर्तित होकर हिन्दी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं वे ही तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे - (उच्च से) ऊँचा, (ओष्ठ से) ओंठ, (दुर्बल से) दुबला इत्यादि।

(ग) देशज शब्द - वे शब्द जिनका निर्माण लोक परंपरा से हुआ तथा देश के किसी क्षेत्रिय भाषा से हिन्दी में प्रयोग किया जाने लगा। जैसे - टोपी, पापड़, लाठी, भोपू, किलकारी इत्यादि।

(घ) विदेशज शब्द - विदेशी शब्द जो हिन्दी भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। अर्थात् भारत के बाहर जन्मे वे शब्द जो हिन्दी भाषा की शब्द-संपदा के अंग बन चुके हैं, विदेशज शब्द कहलाते हैं। जैसे - (अंग्रेजी के) कलक्टर, लैम्प, साइकिल, स्कूटर। (फ्रेंच) रुपन, कारतूस। (जापानी) रिक्शा। (चीनी) चाय, लीची। (अरबी) अदालत, आदमी, शराब, दुकान, दुनिया। (फारसी) चश्मा, कुश्ती, सितार, सरकार, उम्मीद। (तुर्की) कालीन, कैंची, तोप, बहादुर इत्यादि।